ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS: सल्तनतकालीन मुस्लिम शिक्षा, मकतबे, मदरसे, इल्तुतमिश, सिकंदर लोदी।

lYrur dky e efLye f'k{kk & ,d foopu

Jh b'oj flg

प्रवक्ता इतिहास (अतिथि संकाय) रा0व0मा0वि0, आदमपुर डाढ़ी तहसील व जिला चरखी दादरी (हरियाणा) पिन कोड़ – 127310

सारांश एवं प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य – मध्यकालीन भारत में विशेष रूप से सल्तनत काल में मुस्लिम शिक्षा की एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सल्तनतकालीन भारत में मुस्लिम शिक्षा की प्रमुख शिक्षण संस्थाएँ मकतब, मदरसे, शिक्षा का पाठ्यक्रम, शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य, शिक्षण विधि इत्यादि के बारे में विवरण प्रस्तुत किया गया है। शोध–पत्र में सल्तनत काल के विभिन्न सुल्तानों जैसे – इल्तुतमिश, अलाऊदीन खिलजी, मुहम्मद–बिन–तुगलक, फिरोजशाह तुगलक, सिकन्दरलोदी आदि के द्वारा शिक्षा के प्रसार के लिए किए गए प्रयासों का वर्णन किया गया है।

किसी भी राष्ट्र का आधार वह शिक्षा होती है, जो उसके नागरिकों को प्रदान की जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में भारत प्राचीन काल से ही विश्व का एक अग्रणी राष्ट्र रहा है। प्राचीनकाल में भारत में अनेक अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण–संस्थाएँ थी जिनमें विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। मध्यकाल में जब विदेशी जातियों ने इस देश पर अधिकार कर लिया तो उन्होंने अपने तरीके की शिक्षा–प्रणाली लागू करने के लिए यहाँ की अनेक शिक्षण–संस्थाओं, हिन्दु–मंदिरों और बौद्ध मठों को नष्ट करके उनके स्थान पर अपनी शिक्षण–संस्थाएँ स्थापित की। मध्यकालीन भारत विशेषकर सल्तनतकाल में दो प्रकार की शिक्षण–संस्थाएँ थी जिनमें विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे।

1- edrc %& सल्तनतकाल में मकतबे प्राथमिक शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे जो सामान्यतया मस्जिदों से संलग्न रहते थे। इनका संचालन सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा किया जाता था। मकतबों में अरबी और मुख्य रूप से फारसी पढ़ना–लिखना सिखाया जाता था। इनमें विद्यार्थियों को कुरान कंठस्थ करवाई जाती थी। जो मकतबें सुफी खानकाहों से संलग्न होते थे, उनमें सुफी धर्म की शिक्षा दी जाती थी। राज्य में मकतबों की संख्या मदरसों की तुलना में अधिक थी।[1]

2- enjl %& आधुनिक समय के स्कूल और कॉलेजों की भाँति सल्तनत काल में मदरसे उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र होते थे। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यार्थी इनमें प्रवेश ले सकता था। मदरसों में कुरान एवं अन्य धार्मिक ग्रंथ, व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, न्याय–शास्त्र, गणित, हदीश इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी।[2]

ikB ;Øe & सल्तनत काल में भारत में मुख्य रूप से धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती थी जिसमें धर्म पाठ्यक्रम का प्रमुख अंग होता था। तफसीर (धर्म ग्रंथों की टीका) हदीश (परम्पराएँ) फिक (न्यायशास्त्र) अध्ययन के प्रमुख विषय होते थे।3 मुस्लिम धर्मशास्त्र के अनुसार जब बालक चार वर्ष, चार महीनें और चार दिन का हो जाता था तो उसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज दिया जाता था। एक अध्यापक एक बार ज्यादा से ज्यादा पन्द्रह विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाता था। शिक्षा के लिए विद्यार्थियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। अधिकांश मदरसे आवासीय होते थे परंतु कुछ छात्र ऐसे थे जो रोजाना शिक्षा ग्रहण करने के बाद अपने–अपने घरों को वापस लौट जाते थे।[4]

f'k{kk dk mís'; %& सल्तनत काल में इस्लामी शिक्षा के उद्देश्य निम्न थे।

1. इस्लामी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मुसलमानों में ज्ञान की वृद्धि करना था।
2. इस्लामी शिक्षा का अन्य उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना था। यह एक धार्मिक कर्त्तव्य माना जाता था।
3. इस्लामी शिक्षा का तीसरा उद्देश्य इस्लाम धर्म के सिद्धांतों के अनुसार सदाचार की एक विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था।[5]

f'k{kk fof/k %&

सल्तनतकाल में मुद्रण कला का विकास नहीं हुआ था। इस काल में हस्तलिखित पुस्तकें होती थी। अतः इसी कारण सुलेख पर ज्यादा बल दिया जाता था। विद्या रटन्त होती थी और विद्यार्थियों के विचार व्यापक नहीं हो पाते थे। शिक्षा का कोई निश्चित स्तर नहीं था और न ही परीक्षाओं अथवा उपाधि–प्रदान करने की कोई व्यवस्था थी।[6]

यद्यपि सल्तनतकालीन अधिकतर सुल्तान स्वयं अधिक शिक्षित नहीं थे, परंतु उनका शिक्षा के प्रति अपूर्व लगाव था। सुल्तान मुहम्मद गजनवी के शासनकाल में गजनी शिक्षा का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। उसके पुत्र मसूद ने गजनी में एक मदरसे की स्थापना करवाई जहाँ मध्य एशिया से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। ताजुल मासिर का लेखक हसन निजामी हमें सूचित करता है कि मुहम्मद गौरी ने अजमेर में कई मदरसे स्थापित किए थे।[7]

दिल्ली सल्तनत का प्रथम शासक कुतुबुदीन ऐबक स्वयं फारसी एवं अरबी का बहुत बड़ा विद्वान था और वह विद्वानों का बहुत आदर करता था। उसने परम्परागत शिक्षा व्यवस्था को समाप्त करवाया। उसके सेनापति मलिक बख्तियारूद्दीन खिलजी ने हिन्दुओं के अनेक मंदिरों और विद्यालयों को नष्ट करवाकर उनके स्थान पर उसने अनेक मस्जिदों और उनके साथ संलग्न मकतबों का निर्माण करवाया।8 उसने बिहार पर आक्रमण इसलिए किया था क्योंकि वहाँ पर बौद्ध धर्म की शिक्षा का विकास हो रहा था।

दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश एक शिक्षा प्रेमी शासक था। मिन्हाज ने अपनी पुस्तक 'तबकाते नासिरी' में लिखा है, ''इल्तुतमिश शिक्षा के क्षेत्र में उदार था।''9 इल्तुतमिश ने दिल्ली में पहले मदरसें की नींव रखी थी जिसका नाम उसने मुईजुद्दीन मुहम्मद गौरी के नाम पर 'मदरसा–ए–मुईज्जी' रखा। उसने बदायूँ में भी मुहम्मद गौरी के नाम से एक मदरसा स्थापित कराया जो उत्तरी भारत में इस्लामी शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया। उसके दरबार में फारसी भाषा के प्रसिद्ध विद्वान एवं दार्शनिक अमीर खुहानी निवास करते थे।

नसिरूद्दीन महमूद स्वयं एक उच्च कोटि का लेखक था। शासक होने के बावजूद वह लेखन से प्राप्त आय से अपनी आजीविका चलाता था। उसके द्वारा नकल की गई कुरान की एक प्रतिलिपि एक शताब्दी पश्चात् काजी कमालुद्दीन ने इब्नबतुता को दिखलाई थी जब वहा भारत आया था। उसके प्रधानमंत्री बलबन ने उसके नाम पर 'मदरसा–ए–नासिरिया' बनवाया जिसका प्रधान विख्यात इतिहासकार 'मिन्हाज' को बनाया गया।10 नसीरूद्दीन महमूद ने अपने शासनकाल में जालंधर में भी एक मदरसे का निर्माण करवाया था।

बलबन ने पहले प्रधानमंत्री और बाद में एक शासक के रूप में शिक्षा प्रेमियों का बहुत आदर सत्कार किया। उसके दरबार में मीर हसन और अमीर खुसरों जैसे विद्वान निवास करते थे। मंगोलों के आक्रमण के समय मध्य एशिया के बहुत से विद्वानों और कलाकारों ने दिल्ली में शरण ली और वहाँ के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जीवन को गौरवमय बनाया। उसका ज्येष्ट पुत्र शहजादा मुहम्मद विधा एवं साहित्य में रूचि रखने वाला था। उसने फारसी के प्रसिद्ध कवियों की कविताओं का संकलन किया था। शम्शुदीन ख्वारिज्मी, नजमुद्दीन दमिष्की और कमालुद्दीन जाहिद इस सामय के प्रसिद्ध शिक्षक थे।

खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी एक विद्या–प्रेमी शासक था। वह प्रसिद्ध विद्वानों के दरबार में आमंत्रित करता था, जिससे उसके दरबार का वातावरण बौद्धिक हो जाता था। उसका पुत्र मुहम्मद समय–समय पर साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन करता रहता था। अमीर अर्सलान कुली, ताजुदीन ईराकी, मुराद दीवाना, अमीर खुसरों इस समय के प्रसिद्ध विद्वान थे जिन्होंने कविता, इतिहास और विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। जलालुद्दीन खिलजी ने अमीर खुसरों को शाही पुस्तकालय का अध्यक्ष नियुक्त किया था तथा उसे 1200 टंका पेंशन देने की व्यवस्था भी की थी।[11]

अलाऊदीन खिलजी के बारे में बर्नी ने लिखा है, ''अलाऊदीन न विद्वान था और न ही विद्वानों के सम्पर्क में रहता था।'' प्रारंभिक काल में उसने शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, इसका कारण शायद उसका स्वयं निरक्षर होना था। उसने सिहांसन पर बढ़ने के बाद एक मदरसे की स्थापना की जो 'हौजी–खास' नामक मस्जिद के साथ संलग्न था।12 समकालीन इतिहासकार बर्नी ने लिखा है कि अलाऊदीन के समय विदेशों से कुछ विद्वान और कलाकार आये और वे राजधानी में रहने लगे जिसके कारण दिल्ली की तुलना बगदाद, काहिरा और कुस्तुनतुनियाँ से की जाने लगी। उसके प्रधानमंत्री शम्स–उल–मुल्क ने अपना जीवन एक अध्यापक के रूप में शुरू किया था और वह विद्वानों का आदर करता था। फरिश्ता के अनुसार अलाऊदीन खिलजी अमीर हसन और अमीर खुसरों को पेंशन देता था। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उसने अनेक पुस्तकालयों की स्थापना की। कबीरूद्दीन ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'फतहनामा' इसी के शासनकाल में लिखा था।[13]

तुगलक वंश के संस्थापक गियासुद्दीन तुगलक स्वयं एक विद्या–प्रेमी और विद्वानों का आदर करने वाला था। वह फारसी का बड़ा विद्वान था। यद्यपि उसका शासन काल अल्प था परंतु फिर भी उसने अपने शासनकाल में न्याय हेतु एक पुस्तक की रचना करवाई थी।

मुहम्मद–बिन–तुगलक अरबी एवं फारसी का एक अच्छा विद्वान था। उसके बारे में बर्नी ने लिखा है कि, ''निःसन्देह मुहमद तुगलक मध्यकालीन भारतीय सुल्तानों में जो दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुए, उनमें सर्वाधिक योग्य एवं विद्वान शासक था।''[14] उसने 1346 ई0 में दिल्ली में एक मदरसे का निर्माण करवाया जो एक मस्जिद से जुड़ा था।15 मुहम्मद तुगलक ने अनेक कवियों और दार्शनिकों को संरक्षण प्रदान किया। वह उनके साथ समय–समय पर वाद–विवाद करता रहता था। उसके समय में दिल्ली विश्व में शिक्षा का प्रमुख केंद्र थी। उसकी राजधानी परिवर्तन की योजना से मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित दिल्ली की स्थिति को बहुत हानि हुई।

फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में काफी विकास हुआ। उसने दिल्ली में 'हौज–ए–खास' के समीप 'मदरसा–ए–फिरोजशाही' नाम से मदरसे का निर्माण करवाया था। उसके संबंध में बर्नी लिखता है, ''कि इसकी सुंदरता, कलात्मक अनुपात और खुसनुमाई इसको संसार की महान ईमारतों में इतना अनोखा बना देती है कि अगर इसे सिन्मार द्वारा निर्मित खवार्नक या किस्त्र के महल से भी श्रेष्ठ कहा जाए तो अनुचित न होगा।[16] उसने राज्य के विभिन्न भागों में 30 मदरसों का निर्माण करवाया। वह विद्वानों को वजीफा और दान में जमीन भी दे दिया करता था। विद्वानों को ही सम्मान देने के लिए उसने 'अगूँरी महल' का निर्माण करवाया था। सप्ताह में प्रत्येक शुक्रवार को वह साहित्यकारों और संगीतकारों की गोष्ठी आयोजित करता था। वह राज्य के गरीब विद्यार्थियों के लिए छात्रवृति की व्यवस्था भी करता था। मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में स्थापित अनेक कारखानों को उसने व्यावसायिक शिक्षण–संस्थाओं के रूप में परिवर्तित कर दिया। इन कारखानों में दासों या कदि्दयों को विभिन्न प्रकार की दस्तकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। फिरोज ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''मैंने बहुत ही मस्जिदों, कॉलेजों तथा मठों का निर्माण कराया, जिससे इनमें विद्वान, वृद्ध, श्रद्धालु एवं पवित्र व्यक्ति ईश्वर की पूजा कर सकें।[17]

सैय्यद वंश के संस्थापक और शासक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान नहीं दे सके परंतु बदायूँ इस काल में शिक्षा का प्रमुख केंद्र बन गया था। लोधी वंश के संस्थापक बहलोल लोदी शिक्षा प्रेमी शासक नहीं था परंतु वह विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। 'मासिर–ए–रहीमी' के अनुसार उसने कुछ मदरसे स्थापित करवाए थे।

सिंकदर लोदी स्वयं कवि तथा उच्च कोटी का विद्वान था। उसने 'गुलरूख' उपनाम से कविताओं की रचना की थी।18 उसने शिक्षा के प्रसार के लिए सेना अधिकारियों का पढ़ना अनिवार्य कर दिया। डॉ. युसूफ हुसैन के शब्दों में, ''स्वयं एक कवि और साहित्यकार होने के नाते सिकंदर लोदी ने सारे राज्य में मदरसे स्थापित किए। आगरा तथा अन्य स्थानों पर स्थापित मदरसो को चलाने के लिए उसने दूर–दूर के योग्य शिक्षकों को आमंत्रित किया।''[19]

1504 ई0 में उसने आगरा शहर बसाया और 1506 ई0 में उसे राजधानी के रूप में विकसित किया। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उसने मथूरा और नरवार में भी मदरसों की स्थापना करवाई थी। अब्दुल मोहद्दीश लिखता है कि सिंकदर ने अरब, ईरान और मध्य एशिया से बड़े–बड़े विद्वानों को बुलाकर नवस्थापित मदरसों में नियुक्त किया। आगरा के मदरसे में उसने अब्दुला नामक विद्वान को प्रधान अध्यापक नियुक्त किया था। सिकंदर शेख अब्दुला की अध्यापन प्रणाली से बहुत प्रभावित था और कभी–कभी वह उसकी कक्षा में जाकर बैठ जाता था। उसके शासनकाल में आगरा का मदरसा हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध हो गया था।[20] उसके द्वारा स्थापित मदरसों में सभी वर्गों के विद्यार्थी बिना भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। सिंकदर लोदी अपने सत्रह विद्वानों के साथ भोजन ग्रहण किया करता था। उसके शासन काल में हिंदुओं विशेषकर कायस्थों ने फारसी भाषा का अध्ययन प्रारंभ कर दिया। कुछ समय के बाद ये लोग फारसी भाषा में इतने पारगंत या दक्ष हो गए कि उनको सरकारी नौकरियों और प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया जाने लगा।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सल्तनत कालीन अधिकतर सुल्तान शिक्षित नहीं थे जिसके कारण उनका शिक्षा की ओर विशेष लगाव नहीं था, परंतु सल्तनत काल में कुछ ऐसे भी सुल्तान हुए हैं जो शिक्षा के प्रति हमेशा से ही गंभीर रहते थे। उन्होंने शिक्षा के प्रसार एवं प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा दिए योगदान को कभी भी भूलाया नहीं जा सकता।

InHk Iph

1. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 82, जयपुर–2004
2. डॉ. सिंह ओमप्रकाश, मध्यकालीन भारत का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास (750 से 1761ई0 तक), पृ. सं. 380, इलाहाबाद–2001
3. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 83, जयपुर–2004
4. वही, पृ. सं. 83
5. वही, पृ.सं. 83
6. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहन राज, डॉ. अहमद शाहिद, सल्तनकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 140, जयपुर 2014
7. चौधरी सुजाता, शर्मा ब्रह्मदत मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. सं. 87, बीकानेर 1976–77
8. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 84, जयपुर–2004
9. वही, पृ.सं. 85
10. डॉ. नागोरी एस.एल., श्रीमती नागोरी कान्ता मध्यकालीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं. 94, जयपुर–2007
11. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 86, जयपुर–2004
12. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहन राज, डॉ. अहमद शाहिद, सल्तनतकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 141, जयपुर 2014
13. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 87, जयपुर–2004
14. वही, पृ.सं. 87
15. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहन राज, डॉ. अहमद शाहिद, सल्तनकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 141, जयपुर 2014
16. चौधरी सुजाता, शर्मा ब्रह्मदत मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. सं. 87, बीकानेर 1976–77
17. डॉ. नागोरी एस.एल., श्रीमती नागोरी कान्ता मध्यकालीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं. 95, जयपुर–2007
18. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 89, जयपुर–2004
19. वही, पृ.सं. 89
20. चौधरी सुजाता, शर्मा ब्रह्मदत मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. सं. 89, बीकानेर 1976–77